कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

48566

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

प्रवेशिका परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय ..... हिन्दी .....

परीक्षा का दिन.....

दिनांक ...

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14			
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर / अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलाव अपना नामांक, नाम, पहचान, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रका का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका / ग्राफ / मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण स्वरूप परीक्षक को 10 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रे से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित क
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित किसी भी प्रकार की त्रुटि / अन्तर / विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही मा जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - द

23. गौरा को उसके भोजन में मिलाकर अर्थात गुड़ मे सुई रखकर उसे खिला दी गई, जो रक्त संचार के माध्यम से हृदय तक पहुँच गई है इस बात को सुनकर महादेवी जी को कष्ट व आश्चर्य दोनो की अनुभूति हुई। क्योंकि वह स्वयं उसके भोजन की देखभाल करती, फिर ऐसा कौन कर सकता है।

22. कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू - लडकी के इस कथन बालक लहना को दुःख हुआ। वह मन ही मन स्वंय को कोसने लगा। रास्ते मे उसने दूध वाले का दूध उडेल दिया। एक वृद्ध महिला से टकराकर अंधे की उपाधि पायी। नाले में गिरता हुआ बचा। इस तरह की प्रतिक्रिया करता हुआ व अपने घर पहुँचा।

21. 'मनुष्य और उसका काम' इस विषय पर गाँधी जी के विचार थे कि मनुष्य को सदा कर्मशील होना चाहिए। मनुष्य के सतत कर्म से हि देश का विकास संभव हैं। मनुष्य यदि कार्यरत न होकर प्रमाद व आलस्य मे रहेगा तो देश का विकास कैसे संभव होगा? अतः मनुष्य अपने काम के प्रति श्रद्धा रखके आगे बढ़ते रहना चाहिए।

24. तुलसीदास ने लोक कल्याण के लिए वैराग्य धारण किया, वह अपने आराध्य रघुकुल शिरोमणि श्री राम के प्रति पूर्ण समर्पित थे। वह अहोरात्र अपने देव की उपासना व चिन्तन करते रहते हैं। उन्होने अपने आराध्य का सान्निध्य पाने के सारी सांसारिक विषय वासनाओ को त्याग कर दिया तथा लोलार्क कुण्ड के सत्

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

आकर आराध्य की उपासना करने लगी। रत्नावली पतिव्रता स्त्री थी। वह स्वामी की इच्छापूर्ती करती थी। तुलसी दास की द्वारा त्यागने जाने पर इन्होने उनकी जरा भी स्वंय की ओर आकर्षित नही किया। तुलसीदास के चले जाने पर यह रोजाना उनकी पसन्द का भोजन बनाती तथा भुखो लोगो को खिलाती थी। इनके कमरे मे आकर सफाई करती तथा सामान को व्यवस्थित रखती। उनकी धोती को रोजाना धोकर सुखाती तथा जमीन पर सोती थी। तुलसीदास जी कि एक बार कहने पर वह आश्रम से आ गई। इस तरह उन्होने भी तुलसीदास जी की तरह तपस्विनी जीवन यापन कि

खण्ड - ग

15. धीरज, धर्म, विवेक साहित्य, साहस, सत्यव्रत आदि को बुरे समय का साथी कहा है। यदि व्यक्ति मे इन गुणो का भंडार है तो किसी भी भयावह परिस्थिति का मुकाबला कर सकता है। इन्ही गुणो के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तिगत स्वरूप का पता चलता है तथा संसार मे जीवन जीने का तरीका अलग होता है।

सूरदास 'भ्रमरगीत' रचना में गोपियो के माध्यम से सगुण भक्ति का समर्थन व निर्गुण का खण्डन किया है। सूरदास ने श्री कृष्ण के सभी रूपो का मार्मिक चित्रण किया है। गोपियो के माध्यम से सूरदास ने योग साधना को पुरजोर खण्डन किया। वह श्री कृष्ण के अनन्य भक्त है। श्री कृष्ण की जीवन का आधार बताकर अपनी प्रेमाभक्ति व्यं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

13. बिहारी के काव्य में उक्ति वैचित्र्य, अन्योक्ति, अर्थ-गाम्भीर्य अर्थ-विस्तार, आत्मकारिता तथा कल्पना की समाहार शक्ति का विलक्षण समावेश है - यह कथन पूर्ण रूपेण सार्थक है। बिहारी ने अपने दोहे मे गागर मे सागर भरा है जो अन्य कवि कवित्त व सवैया छन्दो मे नही कर पाये। उन्होने अपने काव्य में शब्दो की समास शक्ति प्रयोग हैं।

बिहारी के दोहे के बारे में उक्त कथन प्रचलित है -

सतसैया के दोहरे, ज्यो नाविक के तीर।
देखने में छोटे लगे, घाव करे गंभीर॥

बिहारी ने वास्तव मे अपने काव्य का अनुभूतियो की कल्पनाओ से संजोया है।

उदा० "स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा, देख विहंग विचार।
बाज पराये पानि परे, तू पंछीन न मार॥"

उक्त उदाहरण के माध्यम से बिहारी ने बाज के माध्यम से राजा जयसिंह की ओर संकेत किया। इससे उनकी वैचित्र्य, अन्योक्ति, अर्थगाम्भीर्य आदि कथन उपयुक्त हैं।

12. बाजार मे एक जादू अर्थात् आकर्षण हैं, जो व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता हैं। बाजार मे जाते ही व्यक्ति के मन में तरह-२ के ख्याल आने लगते है, वह सोचता है कि बाजार में बहुत कुछ है उसके पास कुछ भी नहीं। इसलिए वह अपने पर्चेजिंग पावर अर्थात् क्रय करने की शक्ति से वह अनुपयोगी वस्तुओ को भी खरीद लेता हैं तथा बाद मे पछताता हैं। लेखक के मित्र बाजार से कुछ उपयोगी सामान खरीदने गये थे लेकिन जब वह वापस आये तो उनके हाथ मे अनावश्यक वस्तुओ से भरे हुये थें। जब वह बाजार गये तो उनका मन खाली था तथा पर्चेजिंग पावर थी, जिससे बाजार के जादू के प्रति आकर्षित हो गये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बाजार मे चारो तरफ सुसज्जित वस्तुऐ रखी है। तथा चारो तरफ चाँदनी ही चाँदनी फैली हुई होती हैं। जिससे व्यक्ति को स्वंय को खरीदने के लिये आकर्षित करती हैं।

इस तरह बाजार मे व्यक्ति को लुभाने का जादु हैं जिससे व्यक्ति तुरंत आकर्षित हो जाता हैं।

16 शासन की दृष्टि में समानता की बात अत्यधिक महत्वपुर्ण है क्योंकि यदि अगर सभी लोगो को समानता नही मिलेगी, तो परस्पर विद्रोह की भावना उत्पन्न होगी। जिससे देश मे अव्यवस्था व हंगामा जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। जिससे देश की अर्थव्यवस्था को हानी पहुँचेगी तथा अन्य देशो में भी हमारी खराब छवि देखने को मिलेगी।

17 पिता के द्वारा उत्कोच स्वीकार करने पर ममता ने उनके द्वारा लिये गये उत्कोच वापिस देने के लिया। वह कहने लगी हाय। विपद के लिए इतना प्रबन्धन। अरे पिताजी हम तो ब्राह्मण है अगर देश नष्ट। पराजित हो जायेगा तो भी हमे कोई न दो मुठ्ठी अन्न जरूर दे देगा। वह उत्कोच के जरा भी सहमत नही होती हैं।

20 जीवन का भेद बाह्य तडक-भड़क में नही, अन्तर की वृत्त में हैं। इस कथन के माध्यम से वसंत साधा जीवन व उच्च विचारो से परिपुर्ण दिखाई हैं।

वसंत कि निम्नलिखित दो विशेषताऐं -

(i) वह पर्यावरण या सामाजिक माहौल के अनुसार जीना पसंद था। वह हर स्थिति को सामान्य स्तर से लेता हैं।

(ii) वह साफ-सफाई पसंद करता था लेकिन आडम्बर रहि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19. शमशेर बहादुर सिंह प्रयोगवाद के प्रवर्तक थे। इन्होने 'उषा' कविता मे भोर के वर्णन के लिए अलग-अलग शब्द चित्रो, प्रतीकात्मक बिम्बो तथा लय का अद्भुत संयोग से मण्डित किया है। शमशेर बहादुर सिंह ने निम्नलिखित शब्द बिम्बो का प्रयोग किया -
आकाश के लिए - नीला शंख, राख से लीपा हुआ चौका आदि।
भोर के लिए → लाल खड़िया, केसर से धुली सिल आदि।
नये-नये उपमानो का प्रयोग कर ग्रामीण संस्कृति का वर्णन किया है।

10. कदली, सीप, भुजंग .... राहु कटायो सीस ।।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत दोहे नीति विशारद, बहुभाषाविद् से अलंकृत अब्दुल रहीम खानखाना द्वारा रचित 'दोहावली' से अवतरित है।

प्रसंग :- प्रस्तुत दोहे में सुसंगति व मान-सम्मान की व्यंजना कि गई है।

व्याख्या :- कवि रहीम दास जी ने सुसंगत का महत्व बताते हुये कह रह हैं कि स्वाति नक्षत्र मे बरसने वाली बूंदे एक ही होती है, लेकिन वह संगत के अनुसार परिवर्तित हो जाती हैं, केले पर पड़ने से वह कर्पूर, सीप पर पड़ने से बहुमूल्य मोती तथा सर्प के मुँह पर पड़ने से विष बन जाती हैं। अतः हमें अच्छी संगति करनी चाहिए।

रहीम द्वारा वर्णित दोहे मे मान व स्वाभिमान होने की इच्छा व्यक्त कि हैं। मान-सम्मान के द्वारा भगवान शिव ने भयंकर विष का पान किया, तो वह संपुर्ण विश्व / लोको में प्रसिद्ध हो गये, लेकिन राहु के द्वारा छल से अमृत का पान करने से वह गर्दन को कटवाने के लिए विवश हो गया

विशेष → (i) स्वाती नक्षत्र की बूंद के माध्यम से सुसंगत का

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

फल बमाया हैं।

(ii) हम जहाँ भी जाये वहाँ मान, सम्मान, मर्यादा आदि का ध्यान रखें।

(iii) समुद्र मंथन की लीला का शिवजी द्वारा विष पान व राहु की गर्दन कटना का वर्णन किया हैं।

(iv) भाषा का सहज, सरल, व सरस प्रवाह द्रष्टव्य हैं।

(v) शैली मे मार्मिकता, सजीवता, व भावुकता हैं।

(vi) दोहा छन्द का नाद सौन्दर्य अतुल्यनीय हैं।

(vi) प्रसाद गुण का प्रयोग किया हैं।

11. इस प्रकार अपने ज्ञानबल, हृदय बल .... जटिल हो गई हैं।

सन्दर्भ :- प्रस्तुत गंद्याश मनोविकार निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'भय' नामक पाठ से उद्धृत हैं।

प्रसंग :- सभ्यता के विकास से भय कि स्थितियों मे क्या परिवर्तन आया है, इसकी व्यंजना कि गई हैं।

व्याख्या :- शुक्ल जी कह रहे हैं कि व्यक्ति अपने बौद्धिक शक्ति, शारीरिक व मानसिक बल के माध्यम से भय के दुःख को कुछ कम कर सकता हैं। सभ्यता के विकास का क्रम चलता रहा तथा पहले जैसे भय से धीरे-२ छुटकारा मिलने लगा। पहले के मनुष्यों को भूत-प्रेतो व जंगली पशुओ से डर लगता था, लेकिन आज मनुष्य को मनुष्य से भय लगता इस भय से दूर रहने के लक्षण भी नही दिखाई दिये हैं। सभ्यता के विकास के कालक्रम मे सिर्फ इतना अंतर हुआ है कि पहले के भय से छुटकारा तो मिल गया, लेकिन अब मनुष्य ही मनुष्य के भय कारण हैं।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :- (i) शुक्ल जी ने भय नामक मनोविकार के महत्वपूर्ण पक्षों से अवगत कराया है।

(ii) सभ्यता के विकास से मनुष्य के भय मे अन्तर बताया है पहले मनुष्य को भूत प्रेतों, जंगली जानवरो से लगता था लेकिन अब इस बात से कि कई कोई व्यक्ति झूठे दस्तावेजो से उसकी जमीन, घर खाया व पैसा नहीं छीन लें।

(iii) भाषा सहज, सरल व बोधगम्य है।

(iv) शैली विवेचनात्मक, वर्णनात्मक व संवेदनात्मक है।

19 कुँवर नारायण :- आपने हिन्दी साहित्य मे सृजन इसकी महत्व पुर्ण विशेषता बतायी है। कुँवर नारायण बचपन से प्रतिभा शाली व्यक्ति थें। साहित्य सृजन मे अत्यधिक रुचि थी। इन्होंने अपनी उच्चशिक्षा का पुर्ण कर साहित्य रचना मे मन लगाया। यह अन्य पत्र - पत्रिकाओ से जुड़ें। कुँवर नारायण ने अपनी कविताओ में सुंदर भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। कुँवर नारायण की कविताओ मे जीवन का प्रवाह सहज दर्शनीय है। इनका काव्य सरल व सहजाग्राह्य है। इनकी भाषा में मौलिकता, सहजता, गम्भीरता दिखाई देती है। काव्य की दृष्टि में इन्होंने उच्च कोटी का काव्य रचा। काव्य मे संलग्न रहें। इनकी शैली गम्भीर व गहन चिंतन पर आधारित मार्मिक, सजीवकता आदि से परिपुर्ण थी। इनकी कविताओ में तुकान्त योजना, नाद-सौन्दर्य आदि दृष्टव्य है। काव्य चमत्कारी आलंकारिकता आदि सहज दृष्टव्य है।

रचनायें - 'कविता के बहाने' 'बात सीधी थी मगर' इन दिनो, पवित्रता',

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ड.

25 टीवी दृश्य व श्रव्य सामाचार माध्यम हैं। इसमे विजुअल की प्रधानता होती हैं। इस सामाचार करते समय दृश्यता का भी ध्यान रखा जाता हैं। इसका संबंध अशिक्षित वर्गों से भी होता है, इसलिए भाषा सहज, सरल होती हैं। पाठक व श्रोता वर्ग दोनो ही इस सामाचार का आनन्द ले सकते हैं।

26 संपादक लेख को अखबार की आवाज कहा जाता हैं। इसको लिखते समय निम्न बातो का ध्यान दिया जाता है -

(i) यह अखबार के संपादक व उपसंपादक तथा अन्य लेखको द्वारा जाता हैं।

(ii) संपादक लेखन व्यक्तिगत स्तर से उठकर सामाजिक मत के अनुसार होता हैं।

(iii) पक्षपात से रहित यह अखबार का अपना अभिमत स्पष्ट करता हैं।

27 किसी साक्षात्कार को लिखने के बाद व प्रकाशन से पूर्व निम्नलिखित कार्यों का ध्यान चाहिए -

(i) इसको प्रकाशित करने से पहले अवलोकन कर लो कि कोई त्रुटि तो नही हैं।

(ii) भाषा शैली सरल, सहज हो।

(iii) तथ्यात्मक विवरण हो तथा लोगो को संदेश देने वाला

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

28 यदि मुझे पत्रकार बनना पडे तो मैं साहित्यिक शैली मे वाणिज्यिक पत्रकारिता करना चाहूँगी। क्योंकि वाणिज्यिक पत्रकारिता मे सामान्य व्यापार से संबंधित सूचनाऐं, उद्योगो तथा रोजगार से संबंधित सूचनाऐं प्रस्तुत होती हैं। तथा पाठक वर्ग इन विषयो मे रूचि लेते हैं। तथा स्वंय को इन सभी से संबंधित जानकारी रखने में ज्यादा कठिनाई का सामना नही करना पड़ता हैं।

29 यात्रा की विशेषताओ के संदर्भ मे मोहन राकेश के अनुसार व्यक्ति को यायावरी प्रकृति का होना चाहिए। यात्रा के दौरान मनुष्य की तटस्थ दृष्टि का विकास होता हैं। यात्रा करने से मनुष्य का चित्त प्रसन्न रहता हैं। यात्रा करने से अनेक स्थालो के बारे मे अनेक जानकारियाँ प्राप्त की जाती हैं। हम जिस जगह की यात्रा कर रहे हैं वहाँ की सभ्यता, संस्कृति, भाषा, रहन सहन, परिस्थिति वातावरण आदि का पता चलता हैं। इससे हमारे मस्तिष्क में अनेक सूचनाओ का भण्डार होता हैं। यात्रा करने से व्यक्ति दैनिक जीवन से हटकर कुछ नया सिखने व सिखने को मिलता हैं। इससे हमारा कई अपरिचित लोगो से मिलना होता हैं। जिससे हमारा परिचित क्षेत्र मे वृद्धि होती हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ख

4. (अ) चीन → व्यक्ति वाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन।

(ब) पहले → क्रिया वाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन।

5. चमेली का पुष्प श्वेत वर्ण का सुगंधित पुष्प है।
उपर्युक्त वाक्य में अभिधा शब्द शक्ति है।

अभिधा शब्द शक्ति → जहाँ वक्ता के द्वारा कहे जाने वाली बात का सरल व लोक प्रचलित शब्दों का सामान्य प्रयोग किया जाये वहाँ, वहाँ अभिधा शब्द शक्ति है।

इस वाक्य में चमेली की पुष्प की विशेषता बतायी गई, जो कि सामान्य कथन है।

6 अहो तरयौना ही रहो ..... मुकुतन के संग।

उपर्युक्त दोहे में श्लेष अलंकार है।

श्लेष अलंकार → जहाँ काव्य में शब्द एक बार ही आये लेकिन उसके दो या दो से अधिक अर्थ निकले श्लेष अलंकार है।

यहाँ तरयौना (मान का आभूषण तरना), श्रुति (वेद, बेसरि (नाक का आभूषण बिना सिर पैर के) मुकुतन (नाक, ऋषि मुनियों) आदि शब्दों को दो अर्थों में प्रयोग किय

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	8	अर्द्ध शासकीय पत्र

रवि कुमार — शिक्षा विभाग
शासन सि सचीव — अजमेर
दि. 10|3|18
अ.शा.प.क्र → 156

प्रिय वर्मा जी,

सूचित किया जाता है विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए गुणवत्ता पूर्ण वातावरण का निर्माण किया जाये, जिससे विद्यार्थियों का पढने से सुविधा प्राप्त हो। विद्यार्थियों के लिए आवश्यकता के अनुरूप सारी सुविधायें उपलब्ध करायी जाये, जिससें विद्यार्थियों की पढाई में कोई व्यवधान नही पहुँचे। रिक्त पदो पर शिक्षकों की भर्ती की जाये और शिक्षक उपलब्ध कराये जायें।

अत: हमें विश्वास है कि आप आशा के अनुरूप शीघ्र की कार्यवाही करेगें।

सधन्यवाद

भवदीय
रवि कुमार

सेवा में,
समस्त संस्था प्रधान
अजमेर (राज.)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बालिका शिक्षा

9.

प्रस्तावना :- भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ' अभियान की शुरुआत करके बालिका शिक्षा को बढावा मिला हैं। आज के युग मे बेटी का भी उतना महत्व है, जितना की बेटे। बेटी भी अपनी लक्ष्य को प्राप्त कर देश का गौरव प्राप्त कर रही हैं। आज बेटिया घर के कार्यो मे ही नही ~~बल्कि~~ बल्कि उच्च शिक्षा प्राप्त कर अच्छे पदो के पर कार्यरत हैं। बेटियो कि शिक्षा आज के युग मे अत्यन्त महत्व पूर्ण हैं।

बालिका शिक्षा का महत्व :- आज के युग में बेटी के प्रति तुच्छ सोच को छोडकर, उसे आगे बढने का मौका मिलनी चाहिए। आज के युग में बालिका शिक्षा का अत्यधिक महत्व हैं। यदि बेटी पढी - लिखी शिक्षित होगी तो वह अपने देश का, माता-पिता व गुरुजनो आदि का नाम रोशन करेगी। यदि बेटी शिक्षित होगी तो वह अपने घर परिवार मे महत्वपूर्ण भुमिका निभा पायेंगी। बेटिया आज के हर क्षेत्र मे कदम बढाकर अपना नाम रोशन कर रही हैं। वर्तमान युग मे बेटो से भी आगे बेटियां बढ रही हैं। शिक्षित नारी ही समाज कल्याण व देश कल्याण मे अपनी महत्वपूर्ण भुमिका निभा रही हैं। यदि बेटी शिक्षित होगी तो कोई भी उसका शोषण करने का नही ~~सोचगी~~ सोचेगा। अशिक्षित नारियो को अनेक समस्याऐ - गरीबी, दहेज, मारना - पिटना आदि बुरी प्रवृत्तियो को सामना करना हैं। यदि बेटी शिक्षित होगी तो बेटे की भाँती ही, अपने माता-पिता की सेवा करेंगी तथा आगे चलकर सांस - ससुर की सेवा करेंगी। वर्तमान युग में बेटे - बेटियो में कोई अन्तर नही होना चाहिए दोनो को समानता दी जानी चाहिए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बालिका शिक्षा को बढ़ावा -> प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अन्य योजनाओ के माध्यम से बालिका शिक्षा को महत्त्व दिया है। बेटी के जन्म पर, शिक्षा के लिए तथा विवाह के लिए आदि के बालिकाओं को धनराशि अलग-2 दी गई। अब हमें बेटी के प्रति अपनी अमंगल कारी सोच को त्यागकर, उसे पालने-पोषणे व शिक्षा आदि के लिए अपने कदम बढाने चाहिए। बेटी की भ्रूण मे ही जॉच कराना अर्थात लिंग परीक्षण करवाना कानून जुर्म है। बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक दिखाई दीये जा रहे हैं।

खिलेगी कली, तो महकेगी बगिया।
सृष्टि बन जायेगी बंजर, जो न होगी बिटिया।।

उपसंहार -> बालिका शिक्षा मे आज अनेक परिवर्तन दिखाई दिये जा रहे हैं। आज इस ओर कदम उठाये जा रहे कि बेटी भी उतनी जरूरी है जितनी कि बेटा है। बालिका शिक्षा का स्तर धीरे-धीरे बढता है। महिला सशक्तिकरण के प्रमाण सामने हैं। हम भी जागृत हो तथा दूसरो के लोगो को भी इसके प्रति जागरूक करें।

3. (अ) खड़ी बोली हिन्दी ने अपने शब्द भण्डार का विकास लोक प्रचलित शब्दो का प्रयोग किया।

(ब) भाषा के मौखिक व लिखित रूप को व्यवस्थित रखने के लिए जिस शास्त्र का प्रयोग किया जाता है, उसे व्याकरण शास्त्र कहते हैं।

7. (अ) अभ्यासि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - क

1. (क) समाज के कल्याण के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम परस्पर मिल जुलकर अपने आपको को समाज के हित चिंतन में लगे। समाज मे शांति व सद्भाव बनाये रखें।

(ख) किसी देश को प्रशंसनीय बनाने के लिए, वहाँ के निवासियों मे देश के प्रति गर्व की भावना विद्यमान हो तथा मातृभूमि पर स्वाभिमान हो और सह-अस्तित्व और बन्धुत्व की भावना जाग्रत हो।

2. (क) किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व हमे उसकी आवश्कताओं की जानकारी होनी चाहिए। हमे उसके हानि-लाभ, ऊँचनीच, आदि का अपनी बुद्धि से परीक्षण करना चाहिए।

(ख) देश के सुधार के लिए हमे सदैव इसके रक्षण के उपाय सोचने चाहिए। देश की किन कारणों से हानी हो रही हैं उनके बारे शीघ्र चिन्तन कर उन्हे जड़ से उखाड़ फेंक देने चाहिए।